एक हार गुलाब का लायी हूँ बाबोसा तेरे दरबार में लिरिक्स

एक हार गुलाब का लायी हूँ,
बाबोसा तेरे दरबार में,
तेरे दर्शन को मैं आई हूँ,
संग ले सारा परिवार में।bd।

तर्ज – बड़ी दूर से चलकर आया हूं।

ना धन दौलत न माया है,
न कोई मोटर कार है,
मैं पैदल पैदल आयी हूँ,
बाबोसा तेरे प्यार में,
एक हार गुलाब का लाई हूँ,
बाबोसा तेरे दरबार में।bd।

ना कुबेर का धन चाहूं मैं,
ना इच्छा है मुझे शोहरत की,
हो तेरी एक नजर बस काफी है,
इस स्वार्थ के संसार में,
एक हार गुलाब का लाई हूँ,
बाबोसा तेरे दरबार में।bd।

'प्राची' की तमन्ना है 'दिलबर',
अब लौट के मैं ना जाऊँगी,
चरणों में तेरे गुजरे जीवन,
बस करती रहूं दीदार मैं,
एक हार गुलाब का लाई हूँ,
बाबोसा तेरे दरबार में।bd।

एक हार गुलाब का लायी हूँ,
बाबोसा तेरे दरबार में,
तेरे दर्शन को मैं आई हूँ,
संग ले सारा परिवार में।bd।

गायिका – प्राची जैन।
रचनाकार – दिलीप सिंह सिसोदिया 'दिलबर'

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com